# Innovative Higher Education

*Chief Editor:* Dr. Usha Godara

*Editors:* Dr. Girdhar Lal Sharma • Mr. Ranveer Singh
Dr. Karni Singh Brar • Mr. Ramkumar Verma

Scanned by CamScanner

Edition published in 2018 by
**TWENTYFIRST CENTURY PUBLICATIONS**
# 79, Sheikhpura, P.O. Punjabi University, Patiala (PB) - 147002
Ph. 90564-53888 (Off.), 92167-53888
e-mail: rinku_randhawa77@yahoo.com

*In Association with*

***BOOKMAN***
B-41, Sawan Park
Ashok Vihar, Phase - 3
Delhi - 110052
(M) 98689-32473, 85100-09600
Email: bookmandelhi@gmail.com

The responsibility for the facts or opinions expressed in the papers are entirely of the autho
Neither the College nor the publisher are responsible for the same.

© Reserved

**Innovative Higher Education**

*by*

Dr. Usha Godara, Dr. Girdher Lal Sharma, Mr. Ranveer Singh, Dr. Karni Singh Bra
Mr. Ramkumar Verma

**ISBN:** 978-93-86713-53-7

**Price : 750/-**

*Laser Type Setting & Printed in India at*
Twentyfirst Century Printing Press, Patiala

Scanned by CamScanner

# 53

# टेलिविजन कार्यक्रमो का बी.एड.प्रशीक्षणार्थीयों के सामाजिक बुद्वि व पढ़ने की आदतों पर पड़ने वाले प्रभावो का अध्ययन

*डॉ. आभा सिंह* एवं श्रीमती गुंजन शर्मा***

*वर्तमान युग सुचना क्रांति का युग है यह निर्विवाद है कि सूचना क्रांति ने हमारे जीवन के हर हिस्से का प्रभावित किया है। सभी वर्गो, प्रदेशों के सभी आयु वर्गो के व्यक्तियों के दैनिक क्रिया कलापो में टेलिविजन का प्रभाव नजर आ रहा है शोधकर्त्री द्वारा टेलिविजन कार्यक्रमों का बी.एड.प्रशिक्षणार्थीयों के सामाजिक बुद्वि व पढ़ने की आदतों पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन विषय चुना गया। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य शहरी व ग्रामीण स्तर के महाविद्यालयों के बी. एड़. विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्वि व पढ़ने की आदतो पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना है। सर्वेक्षण विधि का चुनाव करते हुए स्वनिर्मित प्रश्नावली द्वारा दत्त संकलन किया गया। निष्कर्ष में पाया कि ग्रामीण व शहरी, लड़के व लड़कियों के सामाजिक बुद्वि व टेलिविजन के आगे बिताए गए समय व पढ़ने की आदतो में सार्थक अन्तर पाया गया।*

## प्रस्तावना

आधुनिक युग सूचना क्रांति का युग है यह निर्विवाद है कि सूचना क्रांति ने हमारे जीवन के हर हिस्से पर अपना अच्छा या बुरा प्रभाव डाला है। तकनीकी तौर पर इसकी झलक भारत में नित नए विकसित हो रहे माध्ययों में मिल जाती है। टेलिविजन में श्रव्य एवं दृश्य दोनो का समावेश होने से इसका लाभ पढ़े लिखे व अनपढ़ दोनो उठा सकते है। टेलिविजन ने घटनाओं को आवाज व दृश्य के साथ हम तक तीव्र गति से पहुँचाया है। मानव समाज में जो घटित होता है वो मानव से सीधा संबंध रखता है। यानी मानव के तर्क–वितर्क, जय–पराजय,संघर्ष, मानव निर्मित आपदाएं, घटना, दुर्घटना, अच्छाई–बुराई, विश्वास–अंधविश्वास आदि मानव के साहित्य, संस्कृति एवं कलारूपी तकनीक में ढल जाते है टेलिविजन इन्हें ऑक्सीजन देने का काम करता है। मनुष्य को रास्ता भी दिखता है,परिस्थिति से जूझना भी सीखाता है गदंगी को हटाकर स्वच्छ जगत का निर्माण करने का प्रयास भी करता है। टेलिविजन समाज का आईना है तथा जागृति लाने का माध्यम भी।

टेलिविजन सभी क्षेत्रो की सूचनाएँ प्रदान कर मनुष्य की शिथिल इन्द्रियों को गतिमान करता है टेलिविजन मानवीय गुणो व मूल्यों के विकास व मस्तिष्क को संतुलित करने का माध्यम भी है। परन्तु समाज में हो रहे दिन प्रतिदिन के परिवर्तनों को देखकर टेलिविजन ने अपने तेवर बदले है। इसलिए नैतिकता व मानवता का प्रश्न बार–बार उठता है जिस उद्देश्य से टेलिविजन शुरू हुआ वह अब कोसो पीछे छूट गया। किशोरों के हाथो मे कलम की जगह रिमोट आ गया किताबों के पन्ने बदलने की बजाय टेलिविजन के दृश्य बदल रहे है। उम्र से पहले बहुत कुछ आपत्तिजनक देख रहे है। परिणामस्वरूप सोचने समझने की शाक्ति प्रतिदिन क्षीण होती

* ऐसोसिएट प्रोफेसर (शिक्षा विभाग), जैन विश्व भारती, संस्थान, लॉडनू (नागौर)
** शोधार्थी (शिक्षा विभाग), जैन विश्व भारती,संस्थान, लॉडनू (नागौर)



Scanned by CamScanner